Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.05, May,2025

भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत साहित्य सर्जना में नवाचार

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, द्वारिकागंज, कटकाखानपुर, सुल्तानपुर

****

शोधसार : *नवाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है। नव+आचार, नव का अर्थ है नया और आचार का अर्थ है आचरण या परिवर्तन। नवाचार वह परिवर्तन है जो पूर्व स्थिति विधियों और पदार्थों आदि में नवीनता का संचार करता है।*

बार्नेट एच.जी*. के अनुसार- "नवाचार एक ऐसा विचार है, व्यवहार है अथवा पदार्थ है, जो नवीन है और वर्तमान स्वरुप में गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।"*

रोजर्स ई.एम. *के मत में – " नवाचार वह विचार है जिसकी प्रतीति व्यक्ति नवीन विचार के रुप में करे।"*

माइलैक्स एम.बी. *के शब्दों में- "नवाचार वह नवीन और विशेष परिवर्तन है, जो समझ-बूझकर किया गया है। उद्देश्य प्राप्ति की दृष्टि से यह परिवर्तन अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।"*

मुख्य शब्द*: स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत साहित्य , नवाचार, युवालेखन*

****

रचनाकार एक सामाजिक प्राणी होता है। उसके आस-पास जैसा वातावरण होता है वह उसी के अनुरुप रचना करता है। इसीलिए **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** ने "साहित्य को समाज का दर्पण" कहा है। **मुंशी प्रेमचन्द** ने साहित्य को "जीवन की आलोचना" कहा है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक **प्रो.मैनेजर पाण्डेय** का कथन है –"साहित्य रचना एक सामाजिक कर्म है और कृति एक सामाजिक उत्पादन, लेकिन साहित्य की रचना व्यक्ति करता है, इसलिए समाज से साहित्य के सम्बन्ध को समझने के लिए समाज से रचनाकार व्यक्ति को ठोस ऐतिहासिक सम्बन्ध की समझ आवश्यक है।"

पाश्चात्य विद्वान **वर्सफील्ड** ने साहित्य की परिभाषा देते हुए लिखा है-" Literature is the brain of humanity." अर्थात् "साहित्य मानवता का मस्तिष्क है।"

स्वतन्त्रता के बाद का जो वातावरण बदला उसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। ऐसे समय में देववाणी कैसे अछूती रह जाती। स्वतन्त्रता के बाद संस्कृत की विभिन्न विधाओं में जो नवाचार गद्य-पद्य आदि विधाओं में दृष्टगोचर हुआ वह कुछ इस प्रकार है।

गद्य विधा में नवाचार

स्वतन्त्रता के बाद से बहुत सारी नवीन गद्य विधाओं में रचनाएँ हो रही हैं। जो अधोलिखित हैं -

संस्मरण[1] -व्यक्तिगत अनुभव से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन ही संस्मरण है। यथा- **डॉ.नवलता** द्वारा लिखित 'अनुक्तकथा' (2021 ई.)। **प्रो.रवीन्द्र कुमार पण्डा** ने 'यत्रास्ति ममता तत्रापि मे मन:' नामक संस्मरण लिखा है जो 30मार्च 2021 ई. को गुजरात साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुआ है।

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इसका लक्षण दिया है-

गुणलोकोत्तरैर्यत्र विभवश्चाप्यनुत्तमै:
संस्मर्यते यशश्शेष: संस्मरणं तदुच्यते ||
यत्र चारित्र्यवैशिष्ट्यं व्यक्तेर्गूढं मनोजगत् |
उद्घाट्यते प्रविश्यान्त: संस्मरणं तदद्भुतम् ||
स्थूलस्थूलो जनाचार इष्टापूर्तं न तत्कृतम् |
कायिकं वाचिकं कर्म यान्ति संस्करणार्हताम् ||
गन्धकल्पा विलीयन्ते सूनकल्पे जने गुणा: |
तेषां प्रकाशनञ्चैव संस्मरणं निगद्यते ||
गद्येनापि च पद्येन चम्प्वा कर्तुं हि शक्यते |
तस्मात् काव्यमिदं त्रेधा यात्राकाव्यवदिष्यते ||
व्यक्तिविशेषनिष्ठत्वात् काव्यमेतद् विभिद्यते |
आख्यायिकादिबन्धेभ्य: तदस्तीह स्फुटान्तरम् ||[1]

रिपोर्ताज-रिपोर्ताज शब्द मूलतः फ्रांसीसी भाषा से आया है। इसका सम्बन्ध 'रिपोर्ट' से है। रिपोतार्ज का निर्माण विशुद्ध साहित्यिक वातावरण में होता है । सामान्य रूप से किसी भी घटना का यथातथ्य वर्णन जो पाठक को प्रभावित करने की क्षमता रखता हो, रिपोतार्ज कहा जा सकता है। संस्कृत साहित्य में **भट्ट मथुरानाथ शास्त्री** द्वारा रचित रिपोतार्ज प्राप्त है ।

उपन्यास- उपन्यास आधुनिक संस्कृत वाङ्मय की एक नवीन विधा है | 'उपन्यास' शब्द उप + न्यास से मिलकर बना है | यहाँ 'उप' का अर्थ है – समीप और 'न्यास' का अर्थ है- धरोहर | इस प्रकार इसका अर्थ हुआ – 'पास में रखी हुई धरोहर |'[2]

प्रो. राधा बल्लभ त्रिपाठी के अनुसार-
"गद्यबद्ध उपन्यासो महाकाव्यमयी कथा |"[3]

डॉ.रहस बिहारी द्विवेदी के अनुसार-

गद्यकाव्यवृहद्बन्धं उपन्यासोऽभिधीयते ।
अस्मिन् युगोचितं वस्तुपात्रं कवि समीहितम् । ।
देशकालोकितं चित्रं गद्यशिल्पं मनोहरम् ।
कल्पितं चापि तत्सर्वं यथार्थं सत् प्रतीयते ।।

आचार्यरमाकान्तशुक्लहीरकजयन्तीशुभाभिनन्दनग्रन्थ: (चतुर्थ खण्ड) में **प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** ने संस्मरण का लक्षण इस प्रकार दिया है | इस अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन देववाणी परिषद् नई दिल्ली से सन् 2016 ई. में हुआ है |

कथाऽऽख्यायिकयो: कश्चिन्मिश्रभेदोऽपि साम्प्रतम् |
उपन्यास इति ख्यातो भाषान्तरप्रतिष्ठित: ||
कालखण्डविशेषस्य समग्रं जनजीवनम् |
प्रतिबिम्ब इवादर्शे न्यस्यतेऽत्र सविस्तरम् ||
क्वचित्सामाजिकी क्रान्ति: सर्वोदयसमर्थिनी |
रूढिपाखण्डविध्वंसो नवाचार: क्वचित्पुन: ||
महाकाव्यवदेवायमुपन्यासोऽपि वस्तुत: |
साङ्गोपाङ्ग समग्रञ्च नेत्रृजीवनचित्रणम् ||
धर्मराजनयार्थानां नैव वृत्तं हि तादृशम् |
यदुपन्यासनिर्माणे नोपयोज्यं भवेत्पुन: ||
विविधा: सन्त्युपन्यासा: इतिवृत्तानुरोधत:
कथाप्रस्तुतिभेदाच्च कविप्रतिभयाञ्चिता: ||

बाणभट्ट की कादम्बरी को विश्व का प्रथम उपन्यास माना जाता है | कतिपय विद्वान पं.अम्बिकादत्त व्यास प्रणीत 'शिवराजविजय' को संस्कृत का प्रथम उपन्यास मानते हैं | यह 'शिवराजविजय' बंगाली उपन्यासकार रमेशचन्द्र दत्त की कृति 'महाराष्ट्र जीवन-प्रभात' का संस्कृत अनुवाद है |[5] कुछ लोग जापानी भाषा में सन् 1007 ई. में लिखे गये 'जेन्जी की कहानी' नामक उपन्यास को दुनिया का सबसे पहला उपन्यास मानते हैं |

संस्कृत उपन्यासकारों के नाम हैं-1.भट्टमथुरानाथ शात्री (क) आदर्शरमणी, (ख) भक्तिभावनो भगवान्, (ग) मोगलसाम्राज्यसूत्रधारो मानसिंह: | 2.पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय (क) पद्मिनी (ख) रसकपूरम् 3.प्रो. राधाबल्लभ त्रिपाठी (क) अन्यच्च | 4. प्रो. रामसुमेर यादव (क) वज्रमणि: | 5. नारायणदाश (क)वह्निवलय: | 6.डॉ.उर्मिला रुस्तगी (क) जीवनमञ्जूषा | 7.महेशचन्द्र शर्मा गौतम (क) सुनयना (ख) नीरजा (ग) सुप्रभातम् प्रतीक्ष्यते (देववाणी परिषद् दिल्ली से जनवरी 2022 ई. में प्रकाशित)। 7.सन् 2022 में डॉ.ऋषिराज

जानी का साइंस फिक्शन उपन्यास 'अन्तरिक्षयोधा:' प्रकाशित हो रहा है।

जीवनी[6]**-**संस्कृत जीवनी लेखकों के नाम हैं- वासुसदेव शास्त्री औदुम्बरकर, अप्पाशास्त्रिचरितम्, (1973 ई.) । आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी, कालिदास: , मानवशिल्पी महाकवि, (1973 ई.) । आचार्य रमेशचन्द्र शुक्ल, चारुचरितचर्चा, (1977 ई.) । शिवप्रसाद भारद्वाज महापुरुषचरितावलि, (1963 ई.) ।

आत्मकथा- आत्मकथा गद्य की एक संस्मरणात्मक विधा है। आत्मकथा अपने जीवन की घटनाओं का स्वयं लिखा हुआ विवरण है। जिसमें लेखक स्वयं अपने जीवन के विषय में निरपेक्ष होकर लिखता है। आत्मकथा के विषय में **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** का कथन है-***"जीवनचरितस्यैव प्रकारविशेष आत्मकथा।"***[7] जिन लेखकों द्वारा आत्मकथाएँ लिखी गयी उनके नाम हैं- पं.गणेशराम शर्मा, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, मंगलदेवशास्त्री, पं.रमेशचन्द्र शुक्ल, अमीरचंद्र शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है। किन्हीं तपोवनस्वामी ने भी तपोवनचरितम् नाम से आत्मकथा लिखी है।

भेंटवार्ता/इण्टरव्यू- आधुनिक संस्कृत जगत में भी ये भेंटवार्ताएँ बहुत प्रचलित हैं। जैसे दृक् पत्रिका अंक 20 में बनवाली विश्वाल की संस्कृत कवि एवं कथाकार पद्मशास्त्री जी से भेंटवार्ता, दृक् 22 अंक में संस्कृत कवि समालोचक प्रो.रहस बिहारी द्विवेदी से अपराजिता मिश्रा की बातचीत। दृक् 18 अंक में हरिदत्त शर्मा से शिवकुमार मिश्र/ वनमाली विश्वाल की बातचीत आदि अनेक भेंटवार्ताएं संस्कृत पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं। डॉ. हर्षदेव माधव ने 'कविभारती : हस्ताक्षर और साक्षात्कार' नाम से एक ग्रंथ प्रकाशित किया है। जिसमें प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र का उमेशदत्त भट्ट और प्रो.मंजुलता शर्मा द्वारा लिया गया साक्षात्कार, आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी का प्रो.विन्ध्येशवरी प्रसाद मिश्र 'विनय' द्वारा लिया गया साक्षात्कार। देवर्षि कलानाथ शास्त्री, प्रो.शिवकुमार मिश्र और आचार्य गोविन्द पाण्डेय का बनमाली बिश्वाल द्वारा लिया गया साक्षात्कार। आचार्य जगन्नाथ पाठक का शिवकुमार मिश्र द्वारा लिया गया साक्षात्कार। डॉ.रमाकान्त शुक्ल का अशोक पटेल द्वारा लिया गया साक्षात्कार। प्रो.सत्यव्रत शास्त्री का प्रो.आनन्द कुमार श्रीवास्तव द्वारा लिया गया साक्षात्कार। डॉ.हर्षदेव माधव का डॉ.मंजुलता शर्मा और प्रवीण पण्ड्या द्वारा लिया गया साक्षात्कार शामिल है।

मेरे द्वारा भी आचार्य बलदेवानन्द सागर, डॉ.जगदीश प्रसाद सेमवाल, प्रो.ताराशंकर शर्मा पाण्डेय, प्रो.शशि तिवारी, डॉ.नवलता, डॉ.सुरचना त्रिवेदी का साक्षात्कार लिया गया है। जो हस्ताक्षर, सेतु, संस्कृत सर्जना, सम्यक् भारत जैसी विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है। इसका प्रकाशन ई-बुक के रुप में **"एक मुलाकात"** नाम से वर्जिन प्रकाशन दिल्ली से हुआ है।

डायरी- महाकवि कालिदास रचित मेघदूत की विषय वस्तु को आधार बनाकर डॉ.हर्षदेव माधव ने 'मूको रामगिरिर्भूत्वा' नामक डायरी की रचना की जो संस्कृत साहित्य में डायरी शैली में निर्मित सर्वप्रथम डायरी है **। प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी** ने भी "आत्मनाऽऽत्मानम्, (2011 ई.) नाम से एक डायरी रचना लिखी है।

पत्र–साहित्य- पत्र -साहित्य गद्य साहित्य की नवीनतम विधा है। पाश्चात्य विचारक **डॉ.जानसन** का कथन है" पत्र लेखक के हृदय का दर्पण होता है।" संस्कृत साहित्य में राजस्थान संस्कृत अकादमी से प्रकाशित नवोन्मेष पत्रिका में डॉ.शिवसागर त्रिपाठी की पत्र विधा में विस्तृत शोध लेख प्रस्तुत है। श्री भि.वेलणकर ने कालिदासचरितसुधा, (1955 ई.) । प्रो.सत्यव्रत शास्त्री ने 'पत्रकाव्यम्', पत्रकाव्य संग्रह (1994 ई.) । शिवांगना शर्मा ने पत्रसाहित्यम्, नाम से (नवल-किशोर कांकर के पत्रों का संकलन), संपादित किया है। एस.जगन्नाथ ने पत्रसौध: (1999 ई.) लिखा है।

आचार्यरमाकान्तशुक्लहीरकजयन्तीशुभाभिनन्दनग्रन्थ: (चतुर्थ खण्ड) में **प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** ने पत्रकाव्य का लक्षण दिया है|

रेडियो रुपक- रेडियो भावना के प्रणेता विष्णु प्रभाकर माने जाते हैं।संस्कृत साहित्य में सागर मध्य प्रदेश निवासी भागीरथी

प्रसाद शास्त्री 'वागीश' रचित व 1957 में प्रसारित 'कृषकाणां नागपाश:' संभवत: संस्कृत साहित्य का प्रथम रेडियो रुपक है। डॉ.रमाकान्त शुक्ल ने कई रेडियो रुपक लिखे हैं जो समय-समय पर आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र से प्रसारित हुए हैं। जिसमें प्रमुख हैं- अभिशापम्, आलोकिनी, पंडित राजीयम्।

आचार्यरमाकान्तशुक्लहीरकजयन्तीशुभाभिनन्दनग्रन्थ: (चतुर्थ खण्ड) में **प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** ने रेडियो रूपक का भी लक्षण दिया है|

यात्रा-साहित्य[9]- संस्कृत साहित्य में श्री शैल दीक्षित ने यात्रा साहित्य को प्रतिष्ठापित किया है। इन्होंने 'कावेरी गद्यम्', (जिसमें कावेरी (कुर्ग) यात्रा का वर्णन है) और 'प्रवास वर्णनम्', (इसमें भारतीय प्रदेशं की यात्रा का वर्णन है) रचनाएं लिखी हैं।[9] मथुरानाथ शास्त्री ने 'अस्माकम् उत्तराखण्डयात्रा'[10] और 'भारतपर्यटनम्[11]' लिखा है।पद्म शास्त्री ने मदीया सोवियत यात्रा । प्रो अभिराज राजेंद्र मिश्र ने विमानयात्रा शतकम् । आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ने अमेरिकावर्णना (2008 ई.) लिखा है।

आचार्यरमाकान्तशुक्लहीरकजयन्तीशुभाभिनन्दनग्रन्थ: (चतुर्थ खण्ड) में **प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** ने यात्रा-साहित्य का लक्षण दिया है|

निबन्ध/लेख- संस्कृत के विद्वानों लिखकों में निबन्ध, लेख, आलेख, शोध पत्र लिखने और संग्रह प्रकाशन की भी रुचि रही हैं । कुछ भाषण संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं । मेरे द्वारा भी **"आधुनिक संस्कृत साहित्य में महिलाओं की रचनाधर्मिता"** (गुटेनबर्ग प्रकाशन नई दिल्ली, 2018 ई.) और **"आधुनिक संस्कृत साहित्य : विविध आयाम**" नामक दो शोधग्रन्थ (नोशन प्रेस चेन्नई से 2021 ई. में) प्रकाशित किये गये हैं।

लघुकथा- आधुनिककाल में लघुकथा लिखने की परम्परा बनी हुई है। आधुनिक रचनाकारों में प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ.नारायण दाश, डॉ.वनमाली बिश्वाल, डॉ.प्रमोद भारतीय का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है । युवा लेखकों में डॉ.ऋषिराज जानी ने 'रक्तशाटीधारिणी माता' लिखा है । यह कथासंग्रह ग्रन्थम् प्रकाशन, अमदाबाद से 2014 ई. में प्रकाशित हुआ है।

काव्य विधा में नवाचार

स्वतन्त्रता के पश्चात बहुत सी नवीन काव्य विधाओं का जन्म हुआ जो इस प्रकार हैं-

ग़ज़ल (गलज्जलिका)- ग़ज़ल की परिभाषा देते हुए डॉ.राधावल्लभ त्रिपाठी लिखते हैं-

"द्विपदिकाभिर्निबद्धा गीतिर्गजलमुच्यते |"[12]

संस्कृत के मूर्धन्य मनीषी पद्म श्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने ग़ज़ल को 'गलज्जलिका' कहते हुए ***'गलन्ति अश्रूणि जलबिन्दूनि यस्या सा'*** । व्युत्पन्न किया है । जो प्रचलित उर्दू भाव से साम्य रखती है।[13] संस्कृत ग़ज़ल लेखन का जनक महाकवि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री को माना जाता है ।[14] उन्होंने अरबी-फ़ारसी-उर्दू-अरूज़ (अर्थात छन्द) के साथ संस्कृत के अनेक छन्दों में ग़ज़लें कहीं। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

अयि चित्त! चिरेण विचिन्तयतोऽपि च चञ्चलता न गता न गता।

अपि नाम निरन्तरयत्नशतैस्तव निष्ठुरता न गता न गता ।।

कियदिच्छसि निर्भरशान्तिसुखं न नियच्छसि पादमथाऽभिमुखम्।

अयि गच्छसि साधुपथाद्विमुखं तव निष्क्रियता न गता न गता ।।

आज आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री की केवल तीन ग़ज़लें (तीनों डॉ.राम विनय सिंह द्वारा विरचित आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का संस्कृत कवित्व पुस्तक में प्रकाशित हैं) प्राप्त होती हैं।[15] आधुनिक लेखकों में प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, जगन्नाथ पाठक और डॉ.हर्षदेव माधव की ग़ज़लें उल्लेखनीय है। कुछ प्रमुख संस्कृत ग़ज़ल संग्रह अधोलिखित हैं- 1.काक्षेण वीक्षितम् , डॉ.महराजदीन पाण्डेय (2004 ई.)। 2.कापिशायिनी(1980 ई.), मृद्वीका (1983 ई.), पिपासा (1987 ई.) आचार्य जगन्नाथ पाठक ।3.प्रश्नचिह्नम्, आचार्य इच्छाराम द्विवेदी, (2003 ई.) । 4.वाग्वधूटी, कनीनिका,

मृद्वीका, श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी, मत्तवारिणी, शालभञ्जिका, पद्मश्री प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र (2007 ई.) ।5. 'स्मर्तव्योऽहं तदा' डॉ.कौशल तिवारी (2022 ई.) । 6.अभिज्ञानम् डॉ.राजकुमार मिश्र।

दूतकाव्य/सन्देश काव्य- महाकवि कालिदास के मेघदूत को उपजीव्य मानकर परवर्ती बहुत सारे कवियों ने दूतकाव्य (सन्देश काव्य) लिखे हैं।

विरह/शोक / विलापकाव्य-संस्कृत कवियों में विरह/शोक/ विलापकाव्य लिखने की भी परम्परा रही है । आधुनिक विरहकाव्य कवियों में दिल्ली के युवराई भट्टराई का नाम लिया जा सकता है । इन्होंने 'मनोऽनुरञ्जिनी' नामक एक विरह काव्य लिखा है । जिसका प्रकाशन विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली से 2014 ई. में हुआ है। वे लिखते हैं-

मनसा शपथो विहितस्सुचिरं
न जहामि च ते ! भज मां ससुखम्
मम स्वीकारणञ्च करोसि न वा ?
मयि प्रेम प्रिये ! विदधासि न वा

यक्षगान – यक्षगान कर्नाटक राज्य का लोकनृत्य है। उसी को आधार मानकर आधुनिक कवियों ने संस्कृत में यक्षगान लिखे हैं। जैसे- डॉ.सदाशिव भट्ट विरचित उर्मिला और शिवलीला, (1997 ई.) । डॉ.जनार्दन हेगड़े द्वारा लिखित समरसूरो भीष्माचार्य:, (1991 ई.) यक्षगान, प्राप्त हुआ है।
आचार्यरमाकान्तशुक्लहीरकजयन्तीशुभाभिनन्दनग्रन्थ: (चतुर्थ खण्ड) में **प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** ने यक्षगान का लक्षण दिया है |

विदेशी छन्द परक काव्य- डॉ.हर्षदेव माधव ने विदेशी छन्द हायकू, हाइंका, तांका, सीजो, सॉनेट में बहुत सारे काव्य लिखे हैं।

आधुनिक संस्कृत की काव्य परम्परा में पुराकथाश्रित काव्य, देवस्तुतिपरककाव्य, राष्ट्रभक्तिपरक काव्य, चरितनायकपरक काव्य, सामाजिक समस्यामूलकपरककाव्य, शुद्धरसात्मकपरक काव्य, प्रकृतिवर्णनपरक काव्य,अन्तर्राष्ट्रीय चेतनापरक काव्य, शतककाव्य, लहरीकाव्य, चित्रकाव्य, नीतिसूक्तिपरक काव्य, लोकगीत, कव्वाली आदि काव्य लिखने की प्राचीन परम्परा रही है जो आज भी चल रही है।[16] युवा कवियों में डॉ.बलराम शुक्ल, डॉ.प्रवीण पण्ड्या, डॉ.भारतभूषण रथ, डॉ.सुज्ञानकुमार माहान्ति, डॉ.राजकुमारमिश्र, डॉ.शैलेशकुमार तिवारी, डॉ.अरविन्द कुमार तिवारी, डॉ.कौशल तिवारी, डॉ.पराम्बाश्रीयोगमाया, डॉ.श्रुति कनिटकर, डॉ.संस्कृता मिश्रा, डॉ.ऋषिराज पाठक, डॉ.ऋषिराजजानी, डॉ.युवराज भट्टराई, डॉ.रामकृष्ण तेजपत्ताय, डॉ.महेश भट्ट, डॉ.परमानन्द झा, डॉ.हेमचन्द्रबेलवाल, डॉ.आशुतोषद्विवेदी, डॉ.संजयचौबे, डॉ.शशिकान्त तिवारी'शशिधर', डॉ.सर्वेश त्रिपाठी, डॉ.श्रीनाथधर द्विवेदी, डॉ.राधावल्लभ शर्मा, डॉ.प्रियव्रत मिश्र, डॉ.पंकज झा, डॉ.धनंजय मिश्र, डॉ.प्रीति पुजारा, डॉ.प्रत्यूष वत्सला इत्यादि इस समय संस्कृत में अच्छा लेखन कर रहे हैं।

कुछ अन्य नवाचार

संस्कृत में कुछ ऐसे नवाचार भी हुए हैं। जिनको न तो गद्य विधा में रखा जा सकता है न ही पद्य विधा में। जैसे- साइंस फिक्शन उपन्यास, कॉमिक्स, संस्कृत एप इत्यादि। बालसाहित्य, व्यंग्य साहित्य, अनूदित रचनाएँ आदि कुछ ऐसी भी विधाएँ है जो गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखी गई।

व्यङ्ग्य-साहित्य संस्कृत के व्यंग्य रचनाकारों में डॉ.प्रशस्य मित्र शास्त्री का नाम जगत प्रसिद्ध है। उनकी कुछ रचनाएँ इस प्रकार हैं –- संस्कृत व्यंग्य विलास (1990 ई.), नर्मदा, मामकीन गृहम्, हास्यं सुध्युपास्यम्, अनभीप्सितम्। अन्य रचनाकारों में आचार्य रामदयालु: द्वारा लिखित 'चुटुकुलाशतकम्', (1976 ई.)। डॉ.उमाकांत शुक्ल लिखित परीदिष्टदर्शनम्, (1978ई.)। शिवप्रसाद भारद्वाज लिखित 'मत्कुणायन' (1980 ई.)। वनेश्वर पाठक प्रणीत 'हीरोचरितम्' डॉ.शिवस्वरूप तिवारी रचित 'सुहासिका'। डॉ.सम्पदानन्द मिश्र प्रणीत 'हास्यमञ्जरी'।

बालसाहित्य- संस्कृत में बाल साहित्य के जन्मदाता आचार्य वासुदेव द्विवेदी शास्त्री माने जाते हैं। उनकी रचनाएं हैं- (क) बालनाटकम्, 2014 वि.सं.में (ख) बालनिबन्धमाला, 2001 ई.। युवा रचनाकारों में **डॉ.राजकुमार मिश्र** ने ' डयते

कथमाकाशे' बालकाव्य लिखा है । जो मान्यता प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित है। **डॉ.ऋषिराज जानी** ने 'चमत्कारित: चलदूरभाष:' (साहित्य अकाकदमी दिल्ली द्वारा 2016 ई. का बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त रचना), । इनका दूसरा बालकाव्य है 'कपि: कूर्दते शाखायाम्' जो 2016 ई. खूशबू प्रकाशन अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ है। एक उदाहारण-

लघुके लघुके मे नेत्रे स्त: ।
सदा सुन्दरं शिवं पश्यत: ॥
लघुकौ लघुकौ मे कर्णौ स्त: ।
भद्रं श्रुणत: मधुरं श्रुणत: ॥ पृष्ठ 83

तीसरा बालकाव्य है 'निशिगन्धा' जो 2019 ई. में प्रकाशित है ।**डॉ.संजय कुमार** चौबे ने 'चित्वा तृणं तृणम्' (बालगीतिमालिका), एक बालकाव्य लिखा है जो प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली से 2017 ई. में प्रकाशित हुआ है। इस कृति पर इन्हें साहित्य अकादमी दिल्ली का बाल साहित्य पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है । **युवराज भट्टराई** का एक बालकाव्य संग्रह 'तनीयसी' 2021 ई. में सत्यम् प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है । **डॉ.अरविन्द तिवारी** ने 'बालगुञ्जनम्' (साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 2020 ई. का बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त रचना)। डॉ.वेणीमाधव शास्त्री जोशी ने बाल संस्कृत सारिका ।जनवरी 2022 ई. में **डॉ.हेमचन्द्र बेलवाल** द्वारा लिखित 'पर्वतराजो हिमालय:' एजुकेशनल बुक सर्विस से प्रकाशित हुआ।

अनुवाद साहित्य- संस्कृत में अनुवाद कार्य बहुत पहले से हो रहा है । डॉ.ऋषिराज जानी ने विभिन्न भाषा की दलित कविताओं का अनुवाद 'सूर्यगेहे तमिस्रा' और आदिवासी कविताओं का अनुवाद 'धनुरातनोमि' नाम से किया है । डॉ.हर्षदेव माधव की फेसबुक रचनाओं (संस्कृत हायकू) का अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, अवधी, राजस्थानी, फ्रेंच, नेपाली, गुजराती, ओड़िया, प्राकृत, पंजाबी, इटैलियन, गढ़वाली, हिंदी, उर्दू जैसी 15 भाषाओं में 49 कवियों ने किया है। यह संग्रह 'गगनवर्णानां गूहगवेषा' नाम से संस्कृति प्रकाशन अहमदाबाद से (2021 ई. में) प्रकाशित है। इसका अवधी अनुवाद मेरे द्वारा किया गया है । संस्कृत में महिला सशक्तीकरण पर **'अहं राष्ट्री'** नाम से **डॉ.कौशल तिवारी** का एक काव्यसंग्रह 2024 ई. में प्रकाशित हुआ है जिसमें असमिया, कश्मीरी, गुजराती, डोगरी, तमिल, पंजाबी, मराठी, राजस्थानी, सिन्धी और हिन्दी की कवयित्रियों की कविताओं का संस्कृत अनुवाद है | जिसकी समीक्षा **'स्त्री कविता का अलहदा'** नाम से मेरे द्वारा की गयी है |

पत्र-पत्रिकाएँ- संस्कृत में भी दैनिक साप्ताहिक, समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे हैं । पत्रिकाओं में कुछ पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

संस्कृत एण्ड्रॉयड एप- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर जम्मू के प्रो.मदनमोहन झा ने कुछ मोबाइल एप बनाए हैं जो इस प्रकार हैं-

1.संस्कृत हिन्दी डिक्शनरी 2.संस्कृत अंग्रेजी डिक्शनरी 3.धातुरुपमाला 4. शब्दकल्पद्रुम 5. शब्दरुपमाला 6.वाचस्पत्यम् 7.अष्टाध्यायी 8.सिद्धान्तकौमुदी 9.अमरकोश 10. विद्यालय पथप्रदर्शक 11.हिन्दीशब्दकोश 12.संस्कृत सचित्र शब्दकोश13.कृदन्तरुपदर्शिका 14. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी 15.संस्कृत स्वयं शिक्षक 16.संस्कृत सन्दर्शिका इत्यादि।

आचार्य उमाशंकर 'मंजुल' ने 'सुन्दरकाण्डम्' नामक एक संस्कृत कॉमिक्स लिखा है।

संस्कृत सिनेमा-संस्कृत में अभी तक कुल आठ फिल्मों का निर्माण हुआ है।

(1) **आदिशंकराचार्य:** (राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार- सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म। प्रथम रिलीज 1983, अवधि- 2 घण्टा 40 मिनट, निर्माता एवं निर्देशक- जी.वी.अय्यर, संगीतकार- एम. बाला मुरलीकृष्ण एवं बी.वी.कारंत)

(2)**भगवद्गीता** (प्रथम रिलीज 1993, अवधि- 2 घण्टा 20 मिनट निर्देशक- जी.वी.अय्यर, संगीतकार- एम. बाला मुरलीकृष्ण , निर्माता- टी.सुब्बारामी रेड्डी।)

(3)**मुद्राराक्षसम्** (2006, व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर की प्रस्तुति। बड़े पर्दे की इस संस्कृत फिल्म के निर्माता-

आचार्य उमेश शास्त्री तथा निर्देशक- श्याम सोनी,एवं प्रो.ताराशंकरशर्मा पाण्डेय के संस्कृत संवाद, गीतकार- डॉ हरिराम आचार्य, आचार्य उमेश शास्त्री एवं गिरिजाप्रसाद गिरीश, 08फरवरी 2006 को प्रात: 10.00 बजे प्रीमियर शो जयपुर के राजमन्दिर सिनेमा में।)

(4)**प्रियमानसम्** (केरलराज्यीय विनोद मंकार निर्देशित,नवम्बर 2015 , 17 वीं सदी के कवि विद्वान् उन्नयी वारियर के अनुभव, संघर्ष और प्रेम पर आधारित।)

(5)**पुण्यकोटि** (प्रथम एनिमेशन संस्कृत फिल्म 15अगस्त 2016, निर्देशक- रविशंकर वीं, संगीत- इलायीराजा, निर्माता Puppetica Media.)

(6)**अनुरक्ति:** (अशोकन पी.के.निर्देशित 2017 विश्व की प्रथम थ्री डी संस्कृत फिल्म, हैप्पी ट्यून्स मीडिया के बैनर तले 80 मिनट की अवधि। अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रर्दशित।)

(7)**अहं ब्रह्मास्मि**{Aham Brahmasmi - A movement} (लेखक,सम्पादक, संगीतज्ञ, निर्देशक - आजाद, निर्माता- कामिनी दूबे, द बाम्बे टाकीज़ स्टूडियो एवं आज़ाद फैडरेशन। बड़े पर्दे की संस्कृत{105मिनट की}फिल्म प्रथम प्रदर्शन 09 अगस्त 2019) चंद्रशेखर आजाद के जीवन पर।

(8)**'नमो'** पद्मश्री जयराम की नई संस्कृत फिल्म, कथा - विजीष् मणि, संगीतकार- अनूप जलोटा, गीत- महेश, प्रशान्त,नन्दकिशोर।

वाद्यवृन्द (बैण्ड)- आधुनिक वाद्ययन्त्रों के साथ संस्कृत गीतों की प्रस्तुति का चलन भी हाल के वर्षों में हुआ है। इसमें ध्रुवा बैण्ड, नादप्रकर्ष बैण्ड, शंखनाद (लखनऊ) का नाम उल्लेखनीय है। इनके लिए जिन विद्वानों ने गीत लिखे हैं। उनके नाम हैं - डॉ.जीतराम भट्ट, डॉ.शशिपाल शर्मा 'बालमित्र', डॉ.राहुल सातघर, डॉ.राजेन्द्र भावे, डॉ.हरेकृष्ण मेहेर, डॉ.वाचस्पति मौद्गल्य, डॉ.सतीश कुमार कपूर, डॉ.चारूशीला बेलापुरकर इत्यादि।

निष्कर्ष- इस प्रकार हम देखते हैं कि आदिकवि वाल्मीकि से लेकर आजतक संस्कृत साहित्य का लेखन कार्य निर्बाध रुप से चल रहा है। जहां **गद्यविधा में** संस्मरण, रिपोर्ताज, फीचर, जीवनी, आत्मकथा, इण्टरव्यू, डायरी, पत्र-लेखन, भाषणसंग्रह, लेखसंग्रह, रेडियो रुपक, यात्रासाहित्य, ललित-निबन्ध, लघुकथा, वर्तमान कथा आदि लिखे जा रहे हैं। वहीं **काव्य विधा में** ग़ज़ल, लोकगीत, शोकगीत, विलापकाव्य, विरहकाव्य, चरितपरककाव्य, संगीतिका, नवगीत, रागकाव्य, दूतकाव्य, लहरीकाव्य, प्रशस्तिकाव्य, स्तोत्रकाव्य, गट्ठालगीतकाव्य, प्रतीकात्मक गीतिकाव्य, मुक्तछन्द, विदेशी छन्द काव्य, (हायकूकाव्य, सॉनेटकाव्य), यक्षगान, समस्यापूर्ति परककाव्य आदि लिखे जा रहे हैं। व्यंग्य साहित्य, अनुवाद साहित्य जैसी कुछ विधाएं गद्य पद्य दोनों में लिखी जा रही हैं। संस्कृत सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं, संस्कृत बैण्ड, संस्कृत कॉमिक्स, संस्कृत एप, बाल साहित्य इत्यादि का भी योगदान न्यून नहीं है। नि:संदेह कहा जा सकता है कि- संस्कृत सदैव उन्नत दशा में थी है और रहेगी।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1.प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, , (3/1/14) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 152

2.डॉ.अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृष्ठ संख्या 91

3.प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, , (3/1/13) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 152

4.प्रो.'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, प्रथम संस्करण 2006 ई., अभिराजयशोभूषणम्, चतुर्थ अंश कारिका 105-110, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद।

5.प्रो. हीरालाल शुक्ल, संस्करण 1989 ई., संस्कृत का समाजशास्त्र, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या 263

6.प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, , (3/1/16) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 153

7. प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, , (3/1/17) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 153
8. प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, , (3/1/18) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 153
9.डॉ.जगन्नाथ पाठक, प्रथम संस्करण 2000 ई., आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 517
10. डॉ.जगन्नाथ पाठक, प्रथम संस्करण 2000 ई., आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 516
11. डॉ.जगन्नाथ पाठक, प्रथम संस्करण 2000 ई., आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 517
12.प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2005 ई., अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्, (3/1/9) सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ 150
13. डॉ.रामविनय सिंह, प्रथम संस्करण 2018 ई., आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री का संस्कृत कवित्व, विनसर पब्लिशिंग कं. देहरादून उत्तराखण्ड, पृष्ठ संख्या 210
14. वही पृष्ठ संख्या 210
15. वही पृष्ठ संख्या 212
16. डॉ.जगन्नाथ पाठक, प्रथम संस्करण 2000 ई., आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 121 से 132

Corresponding Author: *डॉ. अरुण कुमार निषाद*
E-mail: arun.ugc@gmail.com
Received: 13 May 2025; Accepted: 27 May 2025; Available online: 31 May 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License